संतों का सार–संदेश

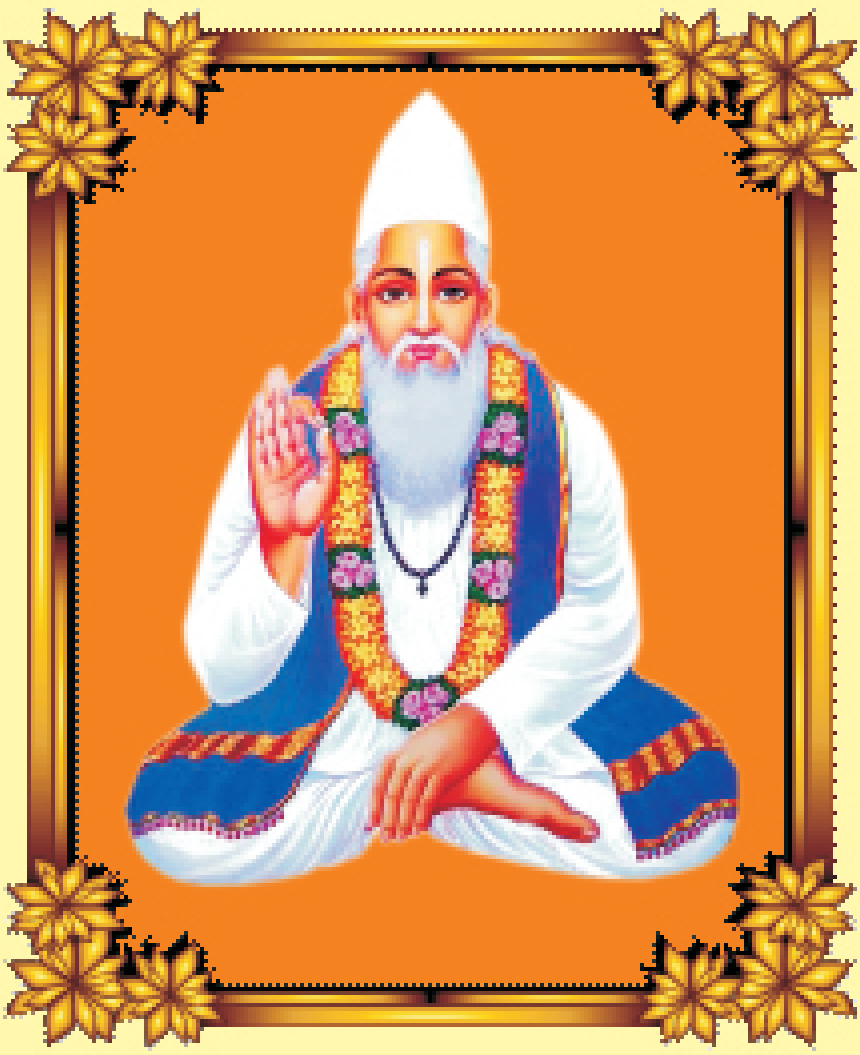

जब हम ही अविनाशी आत्मा हैं,
तो पूजा किसकी करें ?

सार शब्द का भेद

क्या आप तंत्र-मंत्र की साधना में लगे हो ?

तंत्र-मंत्र सब झूठ है, इनमें न भरमें कोई ।
सार शब्द जाने बिना, कागा हंस ना होय।

क्या आप जाप, अजपा या अनहद की साधना में लगे हो ?

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाए।
सुरत समाये शब्द में, वांको काल ना खाए।

क्या आप सोहम शब्द का जाप करते हो ?

सोहम को क्या सुमिरये, सोहम आपोआप।
सुरत समाये शब्द में, बिन रसना का जाप।।

क्या आप सांसों की साधना में लगे हो ?

जो सांसा संग करे पयाना, निश्चे जाएं नर्क निदाना।।

क्या नाम जाप करने से मुक्ति होगी ?

कोटि नाम संसार में, जांसे मुक्ति न होय,
गुप्त नाम सत्पुरूष का, बुझे बिरला कोई।।

फिर क्या करें ?

भेदी गुरू मिले जहां जावो, तन मन अरपो शीश निवावो,
जहां संग बात करो चित लाई, छोड़ो दुर्मत मान बढ़ाई।
सार शब्द सत भाव है, यह भेदी भेद बताय ।
धन्य भाग उण शिष्य का, जो ऐसी सुध बुध पाय।

दो शब्द

धन्यभागी हैं आप कि यह लघु पुस्तिका आपके हाथ लगी, जिसमें न केवल श्री कृष्ण की गीता का दिव्य ज्ञान है अपितु सभी संतों का सार संदेश संकलित हैं।

हो सकता है यह छोटा सा ग्रंथ मनुष्य जीवन को सफल बनाने की दिशा में एक अनूठी प्रेरणा का स्रोत साबित हो जाए। इसलिए समय निकालकर जरूर पढ़ें।

अगर आप विवेकी और आत्मा -परमात्मा के खोजी हो, तो यह छोटा सा ग्रंथ पढ़ने के बाद आपका अंतस् बोल उठेगा-" बस, मुझे इसी ज्ञान का इंतजार था। मेरी खोज पूर्ण हुई। "

विषय सूची

1. तीन बड़े प्रश्न 3
2. यह भटकन कैसे मिटे 4
3. पवित्र ज्ञान / मूल ज्ञान 6
4. मूल ज्ञान की महिमा 10
5. सत्य सनातन 11
6. जड़ चेतन का निवेड़ा 12
7. सत्गुरू का उपदेश 16
8. सत्गुरू का उपदेश कैसे मिले 17
9. कूर्म वृत्ति 19
10. दो अक्षर का भेद 21
11. अपना-अपना इष्ट 23
12. चार राम 23
13. जीव-सीव-पीव 25
14. काल 27
15. सबसे बड़ी भूल 27
16. बाईबिल में प्रमाण 32
17. चाल चालें 33
18. अनुभव ज्ञान बिना सब झूठा 33
19. 52 अक्षर का खेल 35
20. कर्ता भाव 41
21. मूल पुराण 45
22. सारांश 47

तीन बड़े प्रश्न –

1. असल में हम कौन हैं ?
2. हमारी वर्तमान अवस्था क्या हैं ?
3. हमें किसने उलझा रखा है ?

तुम हंसा हो अमर लोक रा : आत्मा
पड़े काल बस आई हो । : काल
मन ही स्वरूपी देव निरंजन, : मन
तुम्हें राख भरमाई हो । : जीव

तुम अमर आत्मा हो, मन रूपी काल के वशीभूत होकर तुम जीव अवस्था में आ गए हो।

अपने स्वरूप को आप भुलाया,
था हंसा फिर जीव कहाया ।
जीव पड़ियों इन मन के हाथा,
नाच नचावे रखे साथा ।

अब यह मन (काल) इस जीव को नाना प्रकार के कर्म करवा कर 84 लाख योनियों में भटका रहा है ।

जड़ पाँच तत्व खुद आप चलावे ,
अपनी भूल चौरासी जावे ।

देव निरंजन सकल शरीरा,
तां में भ्रम भ्रम रहल कबीरा ।

तन और मन का संग कर भ्रमित कबीरा अर्थात यह जीव नानाप्रकार के दुख भुगत रहा है।

काया तो अपनी नाशवान प्रवृति के कारण मर जाती है लेकिन तन व मन में आसक्त जीव (सोहम) अपनी अविनाशी प्रवृति के कारण नए नए शरीर धारण कर भटकता रहता है ।

ओहम काया मर मर जाय , सोहम फिर फिर भटका खाय ।

अब यह भटकन कैसे मिटे ?

हमारी भटकन का मूल कारण है- सत्य से दूर हो जाना और असत्य में रम जाना। अब हमें मनुष्य देह में रहते हुए अर्थात मृत्यु से पहले पहले सत्य असत्य (सार-असार) का निवेड़ा कर लेना है। तभी यह भटकन मिट सकती है।

'नीर-क्षीर का करें निवेरा ,
कहे कबीर सो हंस है मेरा।
क्षीर रूप हरि नाम है, नीर रूप व्यवहार ।

हंस रूप कोई साधु है, तत्व का छाणनहार ।

अर्थात सांसारिक व्यवहार नीर (पानी) है जबकि परम तत्व की खोज करना क्षीर (दूध) है। अब प्राथमिकता हमें तय करनी है कि इस क्षणभंगुर जीवन में सत्य ग्रहण करें कि असत्य

गीता 2/16

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यतेसतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।।

अर्थात् - असत् वस्तु की सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है । इस प्रकार इन दोनों का ही तत्त्व, तत्त्वज्ञानी पुरुषों द्वारा देखा गया है ।

इस जगत में दो प्रकार की वस्तुएं हैं- सत्य और असत्य ।

जगत में बहुत कुछ जानने एवं करने के लिये हैं। व्यक्ति अपनी रूचि और आवश्यकता के अनुसार प्राथमिकता तय करता है लेकिन हम इस भाग दौड़ भरे छोटे से क्षण भंगुर जीवन में पद पैसे और प्रसिद्धि के पीछे सारी उम्र खफा देते है। परंतु जिसके लिए हमें यह अनमोल मनुष्य

जीवन मिला है वह प्रयोजन तो भूल ही जाते हैं ।

अत: अनेकानेक धर्म ग्रन्थ एवं पूजा पद्धतियों का ज्ञान ग्रहण करके टीका टिप्पणी तर्क वितर्क वाद विवाद पांडित्य प्रदर्शन में समय बर्बाद न कर काम की बात कर लेते हैं ।

वाणी बहु प्रकार की, तांका आदि न अंत ।
जो वाणी तेरे काम की ,तांका कर साधन्त ।

कबीर साहब कहते हैं ' सार सार को गहि रहे , थोथा देय उड़ाय ।'

विवेकी व्यक्ति सार - सार को ग्रहण कर लेता है । असार को इक्कठा करने में अपना अमूल्य समय बर्बाद नहीं करता ।

पवित्र ज्ञान– मूल ज्ञान :

'ईश्वर अंश जीव अविनाशी' जब जीवात्मा अविनाशी है तब यह निश्चित है कि हम इस जन्म से पहले भी अनेकों बार अलग-अलग शरीरों में रहे हैं। हम सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग से कर्मानुसार विभिन्न योनियों में भटकते हुए अब कलयुग में आए हैं।

चारों युगों में हमने युगानुरूप प्रचलित भक्ति -साधन, तीरथ- व्रत ,जप- तप, यज्ञ -हवन, पूजा- पाठ इत्यादि जरूर किए होंगे ।लेकिन यह सब करने के बावजूद भी हम आज कलयुग की इस समयावधि में पृथ्वी पर ब्रह्ममृत्यु लोक में ऋही हैं अर्थात हम आज तक ये सब करके मुक्त नहीं हो पाए हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि हमने मुक्ति के नाम पर जो कुछ भी किया है वह मुक्तिदायक नहीं था। इसका उद्देश्य केवल इतना है कि व्यक्ति एक पवित्र एवं धार्मिक जीवन व्यतीत कर सके। मंदिर जाना, पूजा -पाठ करना, नाम-जप करना, भजन-कीर्तन करना आदि पवित्र ज्ञान के अंतर्गत आता है जिसका अनुकरण करके पुण्य अर्जन कर मनुष्य अपने लोक- परलोक को सुविधा संपन्न बना सकता है लेकिन इससे मनुष्य जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नहीं हो सकता।

पाप- पुण्य दोनों एक बेड़ी ।
एक लोहे एक कंचन केरी।

लेकिन मूलज्ञान एक सूक्ष्म भेद हैं जो एक सतगुरु विवेकी शिष्य को देता है ।और उसे अपनी भूल का बोध करवा कर मुक्ति का भेद बता देता है। मूल ज्ञान के बारे में कबीर साहब ने कहा है ''पवित्र ज्ञान हम जग में भाखा, मूल ज्ञान गुप्त कर रखा''

वेद-पुराण-बाइबल-दर्शन इत्यादि ग्रंथ और वाणियों में जो ज्ञान वर्णित है ,वह सब पवित्र ज्ञान है लेकिन मुक्ति का भेद (मूलज्ञान) इन 52 अक्षरी पवित्र ज्ञान से भिन्न है।

वेद सकल का भेद है ,सब वेदों के मांही।
जौन भेद से मैं मिलूं, वेद यह जानत नाहीं।।

तीन लोक का सारा व्यवहार 52 अक्षर में ही होता है लेकिन आत्मा -परमात्मा का भेद इनमें नहीं है।

52 अक्षर लोक त्रय, सब कुछ इन्हीं मांही ।
ये आखर खिर जाएंगे,वो आखर इनमें नाहीं।।

दोस्तों, इन वेदों और वाणियों में 52 अक्षरी ज्ञान है जो कि मनुष्य के जीवन को धार्मिक,

पवित्र और व्यवहार कुशल बनाता है। इसी को पवित्र ज्ञान कहते हैं। परंतु इस ज्ञान से मुक्ति का कोई वास्ता नहीं है। जीवात्मा की मुक्ति तो केवल मूल ज्ञान से ही संभव है ।इसलिए हमें सब कुछ छोड़कर इसी की साधना करनी चाहिए।

एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।
माली सींचे मूल को, फूले फले अघाय।।

मूल ज्ञान क्या है?

जीवात्मा को अपने मूल का बोध हो जाए। अर्थात वह इस सृष्टि में कहां से आई? आने के बाद त्रिगुणी माया में मोहित होकर भटक कर नाना प्रकार के दुख भुगत रही है। अब यह सुरती किस में समाकर अपनी सृष्टि समाप्त कर जन्म -मरण के चक्कर से सदा के लिए मुक्त हो सकती है? यह ज्ञान एक भेदी गुरु शिष्य को सैन द्वारा देता है ।इसी को मूल ज्ञान कहा गया है।

आए हो तुम कहां से, जाना तुम्हें कहां है।
इतना बस विचार लो, हो गया भजन।।

सत से आयो जीव त्रिगुण भरमावियो।

भूल गयो निज देश माया में लिपटाविया।

मूल ज्ञान की महिमा

गीता -3/17

यः,तु,आत्मरतिः,एव,स्यात्,आत्मतृप्तः,च,मानवः
आत्मनि,एव,च,सन्तुष्टः,तस्य,कार्यम्,न,विद्यते

हे अर्जुन,परन्तु जो मनुष्य आत्मा में ही रमण करने वाला और आत्मा में ही तृप्त तथा आत्मा में ही सन्तुष्ट हो उसके लिये कोई धार्मिक कर्त्तव्य नहीं है।

आत्म ज्ञान ही मूल ज्ञान है जिसे प्राप्त किए हुए व्यक्ति के लिए धार्मिक कर्तव्य अर्थात पवित्र ज्ञान (जप तप तीरथ-व्रत योग यज्ञ तंत्र मंत्र) की आवश्यकता नहीं होती है ।

जप तप तीरथ-जोग जिग इन सेती क्या होई।
हरिया पानी ओस का प्यास ना भाजे कोई।

गीता 8/28

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चौव दानेषु यत्पुण्यफलं
प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति

चाद्यम्।।

योगी (आत्मज्ञानी) पुरुष इस रहस्य को तत्त्व से जानकर वेदों के पढ़ने में तथा यज्ञ, तप और दानादि के करने में जो पुण्यफल कहा गया है, उन सबको निःसन्देह उल्लङ्घन कर जाता है और सनातन परमपद को प्राप्त होता है ।

आइये जानते हैं,वह सनातन परमपद क्या है?

सत्य सनातन –

स्वयं को सनातन धर्म के उपासक कहने वाले अधिकतर हिन्दू सनातन का अर्थ तक नहीं जानते हैं जो कि विडंबनापूर्ण हैं ।

सनातन का अर्थ हैं सदा रहने वाला (शाश्वत), जिसका आदि व अंत नही हो अर्थात जो न पैदा होता हैं न ही नष्ट होता हैं। सदा एकरस रहता हैं। कभी बदलता नहीं है ।

वह एकमात्र वस्तु है -आत्मा ।

एक आत्मा को छोड़कर सभी वस्तुएं परिवर्तनशील हैं। पैदा होने वाली और नष्ट होने

वाली हैं। इस मायने में सनातन धर्म की उपासना का अर्थ हुआ -आत्मा की उपासना।

गीता हिन्दू धर्म मैं निर्विवाद रूप से स्वीकार्य ग्रन्थ हैं जिसमे कृष्ण कहते हैं -आत्मा ही सत्य है , आत्मा ही सनातन है। इस परिभाषा के अनुसार न केवल हिन्दू अपितु सारी मानवता (हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई) सनातनी है क्योंकि वे सभी आत्मा की चेतना से जीवित हैं।

जहाँ तक उपासना की बात है अपने आप को सनातनी कहने वाले भी आत्मा की उपासना न कर जड़ पूजा में संलग्न हैं ।

जड़ चेतन का निवेड़ा

आठ प्रकार की जड़ पूजा

पाहिन, माटी,समाधी,जल,ज्योति,अरु काठ।
कागज धातु जानिए ,जड़ पूजा है आठ ।

पाहिन (पत्थर), माटी से निर्मित मूर्तियाँ ,समाधी स्थल (मकबरे इत्यादि) ,ज्योति (दीपक की लो), काठ (लकड़ी) की मूर्तियाँ ,कागज (ग्रन्थ,चित्र,केलेंडर) ,धातु की मूर्तियाँ ये आठ

प्रकार की जड़ पूजा कही जाती है ।

पाहन पूज आन को धावे ,
आपोई आतम देव न पावें ।
(हरिराम दास जी महाराज , सिंहस्थल)

यजुर्वेद (40/9)

अंधन्तमः प्र विशन्ति एसम्भूति मुपासते।
ततो भूयइव ते तमो य उसम्भूत्या रताः।

जो लोग ईश्वर के स्थान पर जड़ प्र—ति या उससे बनी मूर्तियों की पूजा करते हैं वे लोग घोर अंधकार (दुख) को प्राप्त होते हैं ।

गीता में कृष्ण ने अर्जुन को बताया है कि वे लोग अल्प बुद्धि होते हैं जो पत्थर की पूजा करते हैं।

गीता -9/25

यान्ति देवव्रता देवान पितृ न्यान्ति पितृ व्रताः
भूतानि यान्ति भूतेज्यान्ति मद्याजिनोपि माम।

हे अर्जुन, देवताओ को पूजने वाले देवताओ को प्राप्त होते हैं,पित्रों को पूजने वाले पित्रों को प्राप्त होते हैं भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त

होते हैं, मेरा पूजन करने वाले भक्त मुझको प्राप्त होते हैं। इसलिए मेरे भक्तो का पुनर्जन्म नहीं होता।

कबीर - आत्म ज्ञान बिना नर भटके कोई मथुरा कोई काशी

श्री हरिराम दास जी (सिंह स्थल) -

जोग जाग जप तप करे अड़शठ तीर्थ नाय।
उर आत्म इकतार बिना जमरे गेले जाय।

श्री रामदास जी महाराज (खेडापा) -

क्या आचार विचार है क्या साधन सेवा।
सतगुरु बिन पावों नही निज आतम भेवा।

जहां आत्म तहां राम है सकल रहिया भरपूर अंतर्गति लौ लाय के,दादू सेवक सूर।(दादू दयाल)
आत्मा में राम राम में आत्म चिन्नस गुरु मुख विचारी।(नानक)

आतम जान परमात्मा जाने ,संत कहावे सोई।
यह भेद कायासे बाहिर,जाने बिरला कोई। (कबीर)
आत्मज्ञान बिना नहीं मुक्ति, वेद भेद सब देखा जोय"(चरण दास जी महाराज अलवर)

जहाँ सार बात का जिक्र हैं वहां वेद पुराण,

कुरान, बाइबल, गुरु ग्रन्थ साहिब, गीता, संत मत एक हैं। भले ही हम सही मार्गदर्शन के आभाव में आत्मा/सत्य/विदेह/से विमुख हो गये है और असत्य अर्थात देही पूजा मैं युगों युगों से लगे हुए हैंद्य लेकिन दुनिया भर में देही/जड़ पूजा का बोलबाला कर सत्य (आत्मा) को झुठलाया नही जा सकता।

दरिया साहिब कहते हैं -

कंचन कंचन ही सदा, कांच कांच सौं कांच।
दरिया झूठ सौं झूठ है, सांच सांच सौं सांच।।

सत्य समझने के बावजूद जान बुझकर (झूठ) को पकडे रखने वाले व्यक्ति के बारे में संत रामदास जी महाराज कहते हैं

समझे सबहीं सांच पर, जाण संभावे कूर
रामदास उण मिनख सूं,समझ'र रहिये दूर

गुरु नानक साहिब -

आत्म देव पूजिये , गुरु के सहज सुभाई।

मलूक साहिब-जाति हमारी आत्मा, नाम हमारा राम
पंचतत्व का पूतरा, तामे लिया विश्राम।

हरिराम दास जी -

हरिरामा हद छोड़ के बेहद में लवलीन ।
अलग अजूनी आत्मा सोई दोसत कीन ।

सभी संतों और धर्मों ने उसी अलख अजूणी आत्मा (सत्य/सनातन/विदेह)से दोस्ती करने का उपदेश दिया हैं।

आत्मा ही सार है। यही जानने योग्य है । यही सबका मूल है । यही एकमात्र साधने योग्य है । इस एक को साधने से सब सध जाता है ।
एक साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।
माली सींचे मूल को ,फूल पात अघाय । ।
उसे एक को साधने की युक्ति कौन बताएं ?

सतगुरु का उपदेश

मनुष्य चोला धारण करके जगत में आये जीवों के लिए सतगुरु का उपदेश क्या हैं ? ताकि उसे जीवन में उतारकर हम अपना जीवन सफल कर सके।

राम निकट नेड़ा रहिया,मै फिरया परदेश ।
रामदास घट में मिल्या, सतगुरु के उपदेश ।

वह राम अर्थात् सार शब्द (आत्म तत्त्व)

निकट से निकट हैं जिसका भेद एक सतगुरु ही बता सकता हैं ।

संत कबीर ने कबीर सागर ग्रन्थ की प्रथम साखी में ही सार सन्देश (उपदेश) दे दिया हैं । यथा :

सत नाम है सार, बूझो संत विवेक करी
उतरो भव जल पार, सतगुरु का उपदेश यही

यहाँ सतनाम कोई 52 अक्षरी अर्थात् वर्णमाला (स,त,ना,म,) से बनने वाला नाम नही हैं अपितु यहाँ सतनाम हमारे सत्य रूप (आत्म-रूप) की तरफ इशारा है ।

सतनाम कोई नाम नहीं, यह है आपन रूप
जो जाणे इस भेद को, सो पावें आप स्वरूप

सतगुरु का उपदेश कैसे मिले –

औषध आत्म नाम हरिया सतगुरु कही गया।
विषया मिटे विराम जे कोई लेवे बूझ कर।।

आत्म नाम रूपी औषधि प्राप्त करने के लिए हरिराम दास जी महाराज ने गुरु से बूझने (पूछने) के लिए आदेश किया हैं ।

"सतनाम है सार,बूझो संत विवेक करि" पंक्ति में आत्मा का भेद प्राप्त करने के लिए विवेक सहित किसी संत (सतगुरु) से पूछने का आदेश दिया है।

गीता अध्याय 4/34

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन:।4.34।

उस (आत्म ज्ञान) को आत्म दर्शी ज्ञानी महापुरुषों के पास जाकर समझ। उनको साष्टाङ्ग दण्डवत् प्रणाम करने से उनकी सेवा करनेसे और सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे वे तत्त्वदर्शी ज्ञानी महा पुरुष तुझे उस तत्त्वज्ञान का उपदेश देंगे।कृष्ण ने गीता में अर्जुन द्वारा आत्मज्ञान की जिज्ञासा प्रकट करने पर किसी आत्मज्ञानी संतकी शरण में जाकर आत्मा का भेद जानने के लिए उपदेश दिया है ।

भेदी गुरु मिले जहाँ जावो,
तन मन अरपो शीश निवाओ।
सन्मुख बैठ सिष पूछे बैना,
गुरु पारख देय दिखावें नैना।
जहाँ संग बात करो चित लायी,

पुत्र कूर्म (कछुआ) को बताया गया है। यहां सृष्टि रचना की कहानी एक सांकेतिक ज्ञान है ।

वास्तव में आत्मा के 16 पुत्र आत्मा के 16 गुण है। आत्मा का एक विशिष्ट गुण है-कूर्म वृत्ति अर्थात् कछुए जैसी वृत्ति। जिस प्रकार एक कछुआ खतरे का अभास होने पर उससे बचने के लिए इधर-उधर नहीं भागता बल्कि खुद में ही सिमट जाता है।

इसी प्रकार मौत की घड़ी आने पर गुरु द्वारा बताई गई कूर्म (कछुआ) वृति अपनाकर शिष्य खुद में सिमट जाता है। और वह हर प्रकार के भय से मुक्त हो जाता है।

जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनंद।
कब मरिहूं कब पाईहूं पूर्ण परमानंद।।

सच्चे जिज्ञासु और मुमुक्षु को ऐसे गुरु की खोज करनी चाहिए जो उसे अपने में सिमटने की कला में निपुण कर दें।

गीता 7/23

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

पुत्र कूर्म (कछुआ) को बताया गया है। यहां सृष्टि रचना की कहानी एक सांकेतिक ज्ञान है ।

वास्तव में आत्मा के 16 पुत्र आत्मा के 16 गुण है। आत्मा का एक विशिष्ट गुण है-कूर्म वृत्ति अर्थात् कछुए जैसी वृत्ति। जिस प्रकार एक कछुआ खतरे का अभास होने पर उससे बचने के लिए इधर-उधर नहीं भागता बल्कि खुद में ही सिमट जाता है।

इसी प्रकार मौत की घड़ी आने पर गुरु द्वारा बताई गई कूर्म (कछुआ) वृति अपनाकर शिष्य खुद में सिमट जाता है। और वह हर प्रकार के भय से मुक्त हो जाता है।

जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनंद।
कब मरिहूं कब पाईहूं पूर्ण परमानंद।।

सच्चे जिज्ञासु और मुमुक्षु को ऐसे गुरु की खोज करनी चाहिए जो उसे अपने में सिमटने की कला में निपुण कर दें।

गीता 7/23

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि।।

हे अर्जुन: परन्तु उन अल्प बुद्धि वालों का वह फल नाशवान् है, तथा वे देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं और मेरे भक्त चाहे जैसे ही भजें, अन्त में वे मुझको ही प्राप्त होते हैं ।।

गीता अध्याय (4/5)

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन । तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ।।

हे अर्जुन, मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं।उन सबको तू नहीं जानता, किन्तु मैं जानता हूं।

जन्म अनेक तेरो चलि गयउ
जन्म अनेक मेरो पुनि भयउ ।
तूँ अचेत माया में बंधा,
मैं निर्मल जस पूरण चन्दा।
(उग्र गीता,कबीर सागर)

दो अक्षर का भेद

शिष्य यदि अपने पूर्वाग्रह और पक्षपात को दूर करके पूरे सच्चे गुरु की शरण ले लेता हैं तब वह उसे दो अक्षर का भेद बता देता हैं ।

सोई गुरु पूरा कहाए,दो अक्षर का भेद बताये
एक छुडाये एक लखाए,तब प्राणी निजघरको जाए

एक छुडाये अर्थात् 52 अक्षरी नाम (माया) छुड़ा देता हैं । एक लखाए अर्थात् आत्म अक्षर का भेद बता देता हैं ।

कबीर साहब कहते हैं –

बड़े बड़े साधू बानी छानी, राम भाग दोई कीन्हा।
'र' अक्षर पारख कर लीन्हा,'म' माया तज दीन्हा।

एक पूरा गुरु 'र' अर्थात् रमता राम (आत्मा) की परख करा देता हैं और 'म' अर्थात् माया का मूल (52 अक्षर) का त्याग करवा देता हैं।

संत हरिराम दास जी महाराज की वाणी में प्रमाण है

दो अक्षर का भेद विशेषा,सिंवर सदा सुखदाई
अक्षर एक भया घट भीतर,भेद बिना न पाई।
वेद पुराण पढ़े पद पंडित,कहा भयो जे कोई।
दोई अक्षर का मर्म लहोगे, संत कहावे सोई ।

यहाँ आत्म अक्षर की ओर इशारा हैं । 52 अक्षर से बने राम शब्द से कोई प्रयोजन नही हैं।

आत्म घट तन घट से न्यारा,
तनघट भीतर काल पसारा।

अपना अपना इष्ट -

प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति अपने मन मुताबिक इष्ट देव की आराधना में सलंग्न है लेकिन हमें विवेक पूर्वक यह विचार करना चाहिए कि क्या हमारा इष्ट हमें जन्म मरण के चक्कर से मुक्त कर देगा ?

हरिया अपने इष्ट में ,सब कोई होसियार ।
इष्ट इष्ट में अन्तरो, ज्यूँ पारस अर सार ।।
लोहा पारस परस के,पारस भया ना कोई ।
हरिया आत्म परस के ,आपही आत्म होई ।

इष्ट के दो प्रकार – पारस और सार ।

पारस लोहे को स्पर्श करके कंचन बना देता है जबकि सार अर्थात् आत्मा के स्पर्श (स्मरण) से जीव आत्म रूप ही हो जाता हैं ।

चार राम

एक राम दशरथ का बेटा,
एक राम घट घट में बैठा

केहि बल छूटे आपने ,जै न छुडावे पीव।
जीव सीव सब प्रगटे, वे ठाकुर वे दास ।
कबीर और जाने नहीं,एक राम नाम की आस
यह हंसा हे अमरलोक का परयोकाल बस आई हो
मन ही स्वरूपी देव निरंजन तुम्हे राख भरमाई हो
जग में जीव अनंत,न जाणे पीव को
कितना ही दे समझाय, चौरासी रे जीव को
जीव वही जो जग जग जीवे,उत्पुत परलै माहीं
देह धरे भ्रमै चौरासी, कबहूँ निर्भय नाहीं
ओहं काया मर मर जाई,
सोहं फिर फिर भटका खाए।

अर्थात् – सोहम् (जीव) इस मरण धर्मा काया में भटक रहा है ।

बंधे विषय स्नेह सू ,तांते कहिये जीव
अलख निरंजन आप हीं, हरिया न्यारो पीव

यहाँ हरिरामदासजी महाराजने जीव,सीव और पीव को एकही साखी में परिभाषित कर दिया है।

काल

काल काल सब कोई कहे,काल न चिन्हे कोई

तीनों से न्यारा है। इसने सृष्टि नहीं बनाई। मन इस चौथे राम से शक्ति लेकर सृष्टि बना रहा है।

जग में चारों राम है ,तीन राम व्यवहार ।
चौथा राम निज सार है,तांका करो विचार ।

जब इस सृष्टि से बाहर निकालने की अथवा इसे खत्म करने की जीव की प्रबल इच्छा होती है तब यही चौथा राम अर्थात् परमात्मा जीव की राह प्रशस्त करता है।

जीव - सीव - पीव

ये तीन अवस्थाओं के नाम हैं -

जीव - अभी हम सभी जीव अवस्था में हैं । शरीर के बंधन में पड़कर सुख दुःख भुगत रहे है।

सीव - मंत्र एवं साँसों की साधना कर योगी जपी तपी संन्यासी शुन्य में समा जाते है जिसे सीव अवस्था बोला गया है लेकिन यह अवस्था भी अचल नहीं है ।

पीव-यह सर्वोच्च अवस्था है जहाँ जन्म मरण, सुख-दुःख इत्यादि का सर्वथा अभाव है ।

बहु बंधन में बंधिया, एक बिचारा जीव ।
केहि बल छूटे आपने ,जै न छुडावे पीव।
जीव सीव सब प्रगटे, वे ठाकुर वे दास ।
कबीर और जाने नहीं,एक राम नाम की आस
यह हंसा हे अमरलोक का परयोकाल बस आई हो
मन ही स्वरूपी देव निरंजन तुम्हे राख भरमाई हो
जग में जीव अनंत,न जाणे पीव को
कितना ही दे समझाय, चौरासी रे जीव को
जीव वही जो जग जग जीवे,उत्पुत परलै माहीं
देह धरे भ्रमै चौरासी, कबहूँ निर्भय नाहीं
ओहं काया मर मर जाई,
सोहं फिर फिर भटका खाए।

अर्थात् – सोहम् (जीव) इस मरण धर्मा काया में भटक रहा है ।

बंधे विषय स्नेह सू ,तांते कहिये जीव
अलख निरंजन आप हीं, हरिया न्यारो पीव

यहाँ हरिरामदासजी महाराजने जीव,सीव और पीव को एकही साखी में परिभाषित कर दिया है।

काल

काल काल सब कोई कहे,काल न चिन्हे कोई
जितनी मन की कल्पना, काल कहावे सोई
तीन लोक एक जेल है, पाप पुण्य दो जाल
सारा जग भोजन बना ,खाने वाला काल
देव निरंजन सकल शरीरा ।
तामे भ्रम भ्रम रहिल कबीरा

अर्थात् – मन (काल) के वशीभूत होकर कबीरा रूपी जीव भ्रमित होकर नाना प्रकार के शरीरो में आसक्त हुआ बैठा है ।

काल पाई जग उपजे ,काल पाय सब धाय
काल पाय सब बिनसहि,काल काल को खाय

तो फिर क्या करे ?

काल के सिर पर पाँव दे ,सतगुरु के उपदेश
सतगुरु बांहि पकड़ के, ले चले अपने देश ।

सबसे बड़ी भूल

संसार बनाने की भूल किसने की? हमें मुक्ति किससे चाहिए? हमें किसने बंधन में डाल रखा है? हम कौन है ? ये सबसे बड़े सवाल हैं।

तन और मन दोनों जड़ है लेकिन चेतन आत्मा का सहारा लेकर ये चेतन दिखाई देते हैं।

असल में हमारा वास्तविक स्वरूप आत्मा है। आत्मा ही सनातन है और आत्मा से ही गलती हुई। ब्रह्म अपने स्वरूप को भूलकर अपनी परछाई को सर्वस्व मान कर बैठ गया,इसी परछाई से इच्छा प्रकट करके भूल करता चला गया । हमारी इसी भूल से लख चौरासी बनी है । हमारी वह भूल अभी तक ठीक नहीं हुई । हमारी सुरती अभी तक धक्के खा रही है।

भूल मिटे गुरु मिले पारखी, पारख दे लखाई,
कहें कबीर भूल की औषधि,पारख सबकी भाई।

अर्थात यदि हमारे जीवन में शब्द भेदी पारखी गुरु मिल जाए तो वह हमारी भूल सुधार सकता है और हम अपने निज स्वरूप को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

संतो ऐसी भूल जग माहीं,
जांते जीव मिथ्या में जाई।
पहले भूले ब्रह्म अखंडित, झांई आपहों मानी।

झांई में भूलत इच्छा किन्ही, इच्छा ते अभिमानी।

एक सच्चे नाम के बिना कोई रास्ता नही है जो आपको मोक्ष मुक्ति प्रदान करे । और वह सच्चा नाम है आत्मा का नाम । जब आत्म ज्ञान हो जाएगा तब आपको समझ में आएगा कि आत्मा न पैदा होती है ,न मरती है । आप अभी जीव अवस्था में हो इसलिये जन्म मरण का खेल महसूस कर रहे हो । वैसे तो जीव भी कभी नहीं मरता वो आत्मा का ही अंश रूप है । आत्मा की सुरति जब तन और मन का संग कर लेती है तब व कर्मानुसार देह धारण कर लख चौरासी योनियों में भटकती रहती हे । जब यह जीव देह से भिन्न अपने विदेही रूप (आत्मा) का बोध कर लेता है तब जीव अपनी शुद्ध अवस्था में पहुँच जायेगा । तब जो सुरति के रूप में आत्मा से बिछुड़ने की गलती की थी वो भूल सुधर जाएगी और वह दुबारा कभी भी इस दुनिया (मृत्युलोक) में नहीं आएगी ।

भूल के कारण जीव कहाया,भूल का मर्म न जाना

भूल मिटी गुरु मिले पारखी, पारख पद दिखलाना

हो सकता है आप ये सोचने लगो कि परमात्मा तो दयालु है फिर वह सभी जीवों का जन्म -मरण खत्म ही क्यूँ न कर देता और सारी आत्माओं को मुक्ति बक्शीश कर देता ।

दोस्तों, आत्मा अपनी इच्छा से सृष्टि बना रही है इतनी प्रबल इच्छा है सृष्टि बनाने कि उस वक्त सृष्टि बनाके ही मानी । अब सृष्टि तभी खत्म होगी जब इसकी सृष्टि खत्म करने की प्रबल इच्छा होगी । एक प्रतिशत भी उस दुनिया में मोह /आसक्ति/आशा रह गयी तो इसे दुबारा आना ही पड़ेगा। इसमें दूसरा कोई भी कुछ नही कर सकता क्योंकि आप ही कर्ता-धर्ता हो, आप ही इन शरीरो का जाल बुनते है ।

दोस्तों, अभी आपका विवेक इतना जागृत नही हुआ है इसलिए आप यह महसूस नही कर पा रहे हो कि आत्म देव ही सब कुछ कर रहा है लेकिन डोर मन के हाथ में सौंप रखी है

जीव पड़ियों इन मन के हाथा,

नाच नचावे राखा साथा

और मन को धर्मराज बना रखा है इसलिये जीव जितने भी कर्म करता है, मन उसको उसी रूप में शरीरों में ढालता रहता है। इसी मन को काल बोला गया है। यह काल ही हमे सूअर ,कुत्ते, बिल्ली, कीड़े बनाकर लख चौरासी भुगताता है । यह काम परमात्मा का नहीं है ।

अपने स्वरूप को आप भुलाया,
था हंसा फिर जीव कहाया,
जीव पड़यो इन मन रे हाथा,
नाच नचावे राखे साथा
जड़ पांच तत्त्व खुद आप चलावे,
अपनी भूल चौरासी जावे।

गीता अध्याय 14/5 श्लोक -

मन से माया उपजी माया त्रिगुण रूप
पांच तत्त्व के महल में बांध्यो सकल स्वरूप

बाईबिल में प्रमाण

ईसाईयों के ग्रन्थ बाइबिल में भी सत्य अर्थात् आत्मा (कबीर का शब्द) का प्रमाण मिलता है। John-1 के प्रथम पैराग्राम में उल्लेखित है –

In the beginning there was word
Word was with God, Even word was god.

सृष्टि की की शुरूआत में शब्द और गॉड दोनो थे, वर्ड (शब्द) गॉड के पास था और शब्द ही गॉड था। अर्थात् शब्द अब गॉड नहीं रहा। यहां यह स्पष्ट है कि आत्मा शुरू से ही थी। आत्मा परमात्मा के पास थी। यहां तक की आत्मा ही परमात्मा थी। अगर आप वर्ड (शब्द) को आत्मा लेकर चलोगे तो सब कुछ स्पष्ट हो जायेगा। जो वर्ड है वो शब्द है, शब्द ही आत्मा है। शब्द की सुरति उससे अलग हो गयी, इसलिये वह भटक रही है। आत्मा अपने ही जाल में खुद फंसी है। अब सुरति को शब्द में समाहित होने का भेद मिल जाये तो वह पुनः परमात्मा(गॉड) हो जायेगी।

शब्द हमारा आदि का सुन मत जावो सरक,
जो चाहो निज मुक्ति को, शब्द ही ले परख।

चार चालें

भक्ति मार्ग में कबीरसाहिब ने चार चालें बताई है। चींटी,मछली,मकड़ी और विहंगम चाल। इनमें से केवल विहंगम चाल ही व्यक्ति को मुक्तकर सकती है।विहंगम चाल अर्थात पक्षी की चाल। पक्षी की चाल निराधार होती है।चींटी,मछली और मकड़ी की चाल में आधार की आवश्यकता होती है।

अचल विहंगम चाल हमारी,
कहें कबीर सतगुरु देई तारी ।
खुले कपाट सबद झनकारी ।
पिंड अंड के पार सो देश हमारा है ।
कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ।
अनुभव ज्ञान बिना सब झूठा, झूठी हाट लगाई।

अनुभव ज्ञान बिना सब झूठा

आज कल मान बढ़ाई के चक्कर में हर कोई गुरु बन बैठा हैं।अनुभव ज्ञान तो है नहीं, मनमुखी ज्ञान से समाज को भ्रमित कर रहे हैं।

बिन देखे वा देश की बात कहे सो कूर,
अपुहि खारी खात है,बैचत फिरे कपूर।।

लेकिन दुर्भाग्य है कि लोग सत्य असत्य का विचार किए बिना ऐसे अज्ञानियों के साथ जुड़कर अपना अनमोल जीवन व्यर्थ कर देते हैं।

पलटू साहिब कहते है-

जब लग पहुंचे नाही ,कथे ना झूठी बानी
मिले सबद जब जाय, मिले टकसार ठिकानी
जोरि जोरि दुइ बात ,कहे जो राम की ।
अरे हाँ पलटू, ज्यों बालू की भीत कहो किस काम की।

कुछ लोग ज्ञान समझ कर भी गुरु बदलने की हिम्मत नहीं जुटा पाते क्यों कि वे इस डर में जीते हैं कि गुरु बदलने से उन्हें दोष लग जायेगा।जबकि कबीर साहिब कहते हैं

झूठे गुरु को झटक दे, शिष शाखा कु फूंक।
ता में दोष है नहीं जरा, शब्द कहा हम कूक

गुरु कब तक बदलते रहें ?

जब लग गुरु मिले नहीं साँचा ।
तब लग गुरु करो दस पाँचा ।

सच्चा और पूरा गुरु कौन ?

सोई गुरु पूरा कहाये ,दो अक्षर का भेद बताये।
एक छुड़ाए एक लखाए तब प्राणी निज घर को जाए ।

क्या छुड़ाए, क्या लखाए ?

मनुष्य द्वारा बनाए 52 के नाम छुड़ा दे और आदि नाम लखा दे ।

क्या है 52 अक्षर और आदि अक्षर ?

बावन अक्षर जीभ आधारा ।
आदि नाम जीभया से न्यारा ।

52 अक्षर से क्या मतलब है ?

52 अक्षर का खेल

52 अक्षर लोक त्रय, सब कुछ इन्हीं माही ।
ये आखर खिर जाएंगे, वो आखर इनमें नाहीं।

संसार में सभी भाषाएँ 52 अक्षर/ वर्णमाला का खेल है। इन्हीं अक्षरों से शब्द, शब्दों से वाक्य और वाक्य से वार्तालाप और व्याख्यान अस्तित्व में आते हैं । संसार में 52 अक्षरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अलग-अलग भाषाओं में इन्हीं 52 अक्षरों से

निर्मित नाम राम, अल्लाह, वाहेगुरु, गॉड इत्यादि नाम से परमात्मा को अभिहित किया जाता है। लेकिन 52 अक्षरी नाम को ही परमात्मा समझना हमारी भूल है।

कोटि नाम संसार में ,जिन से मुक्ति ना होय
गुप्त नाम सत्पुरुष का ,बुझे बिरला कोई।

इन 52 अक्षरों से कोटि अर्थात करोड़ों नाम बनाए जा सकते हैं लेकिन इन्हें रटने से मुक्ति का कोई वास्ता नहीं है । परमात्मा का नाम अत्यंत गुप्त है जिसका ज्ञान शिष्य द्वारा श्रद्धापूर्वक पूछे जाने पर गुरु देता है।

श्रद्धावां लभते ज्ञानम्

परमात्मा मनुष्य द्वारा बनाये गये (man made) 52 अक्षरों (वर्णमाला) का नाम नहीं है अपितु यह एक वस्तु है जो संपूर्ण सृष्टि का आधार है।

लेकिन दुर्भाग्य है कि मनुष्य ने परमात्मा के नाम पर होठ, कंठ, जीभ से निकलने वाले 52अक्षरी नाम जैसे राम, कृष्ण, राधे राधे, वाहेगुरु, सतनाम, सतराम, सोहम्, सत्य कबीर,

क्लीं कृष्ण क्लीं, अल्लाह हू अकबर इत्यादि का जाप शुरू कर दिया है।

परमात्मा को प्राप्त करने के लिए परमात्मा के नाम का उच्चारण करना ठीक उसी प्रकार मूर्खता है जिस प्रकार प्यास लगने पर पानी नाम की वस्तु का सेवन करने की बजाय पानी - पानी का उच्चारण करने से प्यास नहीं बुझती है।

बिन गुरु ज्ञान अरस परस बिन,
नाम लिए क्या होई।
धन धन कहे धनिक जो होई
तो निर्धन रहे न कोई।
52 के जंजाल में ,पड़ गया यह संसार।
सुमिरन 52 का करें, कैसे उतरे पार।।

परमात्मा प्राप्ति और जीवन मुक्ति की आस में जो लोग 52 अक्षरी नाम के फेर में पड़े हैं उनके लिए साहिब ने कहा है-

जो नर पड़े 52 के फेरा।
सो नर कहिए काल के चेरा ।।

जो भी अक्षर और नाम होंठ, कंठ, जीभ से

बोलने में आता है वह परमात्मा का नाम नहीं है।
52अक्षर जीभ आधारा,आदिनाम जिह्वा से न्यारा।
वांही को सत सुमिरन कहिए, सुमर सुमर नर उतरो पारा।

पलटू साहिब कहते है-

क्षर अक्षर चौतीस में कहिए, शेष नाम तां मांही
निअक्षर वह जुदा रहत है,लिखण पढ़ण में नाही ।

हरिरामदास जी महाराज (सिंहस्थल) -

हरिया अक्षर पुस्तकां ,लिख्या भाख्या माहीं
अण अक्षर सो जानिये,कहन सुनन में नाहीं।
सतगुरु ऐसा कीजिए पड़े निशाने चोट।
सुमिरन ऐसा कीजिए, जीभ हिले नहीं होंठ।
होंठ कंठ लागे नहीं, जिभ्यां नहीं उच्चार ।
गुप्त वस्तु तोंकू दियो, लेहुं शीश उतार।

वह परमात्मा का नाम ध्सार शब्द ध्आदि नाम वेद ,पुराण ,बाइबल, कुरान ,दर्शन इत्यादि धर्म शास्त्रों में भी नहीं है इसलिए उसे गुप्त नाम भी कहा जाता है। कबीर साहब कहते हैं

33 अरब वाणी हम भाखा,

सार शब्द को न्यारा राखा ।

मनुष्य जब तक इस 52 अक्षरी नाम से न्यारा सार शब्दध गुप्त नाम (आत्मा) का भेद प्राप्त नहीं कर लेता तब तक वह काल के जाल से बचने वाला नहीं है।

बचना चाहो काल जाल से, चिन्हो शब्द हमारा ।
कहे कबीर अमर कर राखूं, जो निज होय हमारा।

असल में हम देही (शरीर रूप) से भिन्न शब्द स्वरूप ही हैं।

अपने निज रूप अर्थात वास्तविक रूप (आत्मा) का भेद जानने के लिए हमें शब्द भेदी (आत्म ज्ञानी) गुरु की शरण में जाना चाहिए।

शब्द हमारा तू शब्द का, सुन मत जा सरक।
जो चाहे निज रूप को,शब्द ही ले परख।

हम हैं शब्द शब्द हम माही,
हमसे भिन्न और कछु नाहीं।
शब्द ना बिनसे बिनसे देही,
कहें कबीर हम शब्द स्नेही।

देह नाशवान है जबकि हमारा निज स्वरूप /

शब्द स्वरूप / विदेह स्वरूप /आत्म स्वरूप कभी न मरने वाला है।

'हमारा वास्तविक स्वरूप शब्द स्वरूप है' यह पढ़ कर जनसाधारण की बुि भ्रमित हो सकती है कि शब्द तो 52 अक्षरों के योग से ही बनते हैं जबकि हमारा निज स्वरूप 52 अक्षर से न्यारा है। फिर भी अपने विदेह स्वरूप को शब्द स्वरूप क्यों कहा गया है?

शब्द शब्द सब कोई कहे, वह तो शब्द विदेह।
लिखना में आवे नहीं, निरख परख कर लेह।
शब्द शब्द बहु अंतरे, सार शब्द मथ लीजै।
कहें कबीर जहां सार शब्द नहीं, धिक् जीवन सो जीजै।
कबीर अक्षर के बोलते, होई अकार अनुसार ।
अक्षर के विकार को, मूढ़ कहे करतार।।

अधिक जानकारी के लिए कहत कबीर सुनो भाई साधो यूट्यूब चैनल नितिनदास के सत्संग सर्च कर मूलज्ञान सत्संग सुनिए।

रामदास जी महाराज , खेड़ापा, जोधपुर

रामदास सत राम है, सो अन घड़िया देव
घड़िया तो जम लूटसी, जाकी झूठी सेव ।
सुखसारण जी रूराना बाई की पर्ची से
घट में राम झिगा झिग जागी
दुनिया फिरे देवरा भागी
साँच बिना साहिब नहीं रीझे
झूठा किरत काहे कूं कीजे ।

कर्ता भाव

गीता 18/17

यस्य नाहं तो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते ।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते।।

अर्थात् - जिस पुरुष के अन्तःकरण में 'मैं कर्ता हूँ' ऐसा भाव नहीं है तथा जिसकी बुद्धि सांसारिक पदार्थों में और कर्मों में लिपायमान नहीं होती, वह पुरुष इन सब लोकों को मारकर भी वास्तव में न तो मरता है और न पाप से बँधता है।

कबीर सागर में उल्लेख है-" जब लग जानो मैं हूं करता, तब लग गर्भ जून में फिरता ।"

जब लग जानो बेरी मीत,
तब नग नाहीं निश्चल चीत।

यह कर्ता भाव ही हमारे कर्म बंधन का कारण बनता है और कर्म भुगतने के लिए हमें पुनर्जन्म (बार-बार जन्म) लेना ही पड़ता है ऐसा प्रकृति का विधान है।

गीता 8/6

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः।।

हे कुन्ती पुत्र अर्जुन ! यह मनुष्य अन्तकाल में जिस-जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर का त्याग करता है, उस-उस को ही प्राप्त होता है, क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहा है ।।
जां आशा तां वासा होई, वां को रोक सके ना कोई।।

गीता - 2/47

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संङ्गोऽस्त्वकर्मणि

अर्थात् तेरा कर्तव्यकर्म करने में ही अधिकार है, उनके फलों में कभी नहीं। कर्मफल का हेतु (कारण) भी मत बन और तेरी अकर्मण्यता (कर्म न करना) में भी आसक्ति न हो ।

आशा बैली कर्म बन, गरजै मन के साथ।
तृष्णा फूल चमकना, फल कर्ता के हाथ।
(संत श्री हरिराम दास जी सिंहस्थल)

गीता - 14/5

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्र तिसंभवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।

अर्थात् - हे अर्जुन! सत्वगुण, रजोगुण, और तमोगुण -ये प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बांधते हैं ।।

पांच पच्चीस तीनका पिंजरा,तांमें तुमको राखे हो।
तुमको बिसर गई सुधि घरकी महिमा अपनी भाखे हो।

तीन लोक एक जेल है पाप पुण्य दो जाल।
सारा जग भोजन बना, खाने वाला काल।

पाप पुन दोनों है बेड़ी,एक लोहे एक कंचन केरी।

एक बार ये अविनाशी आत्मा त्रिगुणात्मक शरीर का संग कर लेता है फिर ये कर्म बंधन के वशीभूत हो कर दुशह यातनाएं भुगतता है।

पापपुण्य को न्यारा ठानु,जो तुम कर्म करो सो जानू।
तुमरा कर्म तुम्हें भुगतांऊ,आदिपुरुष की आज्ञा पाऊं।
साहिब की आज्ञा है मौंकू, महा कसौटी देऊं तौंको
घड़ी घड़ीका लेखा लेऊ,कर्मादिक तेरा भरि देऊं।

गीता -9/8

प्रतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः।
भूतग्राममिमं त्स्नमवशं प्र तेर्वशात्।।

अर्थात्-अपनी प्रकृति को अङीग्कार करके स्वभाव के बल से परतन्त्र हुए इस सम्पूर्ण भूत समुदाय को बार-बार उनके कर्मों के अनुसार रचता हूँ ।।

लेकिन भेदी गुरु से भेद लेकर जो व्यक्ति कर्म बंधन के मूल अहम भाव, कर्ता भाव को ही नष्ट कर देता है। उसके लिए सृष्टि समाप्त हो जाती है।

मूल जला बैली जली, हुआ बीज का नाश।
सूरत समानी शब्द में, नहीं जामन की आश।

इसलिए व्यक्ति को इस मनुष्य देह में रहते हुए अपनी सूरत को शब्द में समाने का भेद प्राप्त कर लेना चाहिए।

नीर क्षीर का करे निवेरा,कहें कबीर सो हंस है मेरा।
क्षीर रूप हरि नाम है नीर रूप व्यवहार ।
हंस रूप कोई साधु है, तत्व का छाणन हार।

ग्रंथ मूल पुराण
(श्री रामदास जी महाराज, खोड़ापा)

सतगुरु सेती विनती, परब्रह्म सूँ परणाम
अनतकोटि संत रामदास, निसदिन करूँ सलाम।।
चार जुगाँ की क्या कह गाऊँ,असख जुगाँ की कथा सुनाऊँ
असख जुग सब परलै जाई, सदा रहै इक अणघड़ साई।।
असख जुग्ग कहणा में आवै,पारब्रह्म को पार न पावै।।
बाब न बाद्क पवन न पाणी,इला न आभौ ना ब्रह्माणी ।।
सुन्य महासुन और न कश्चई,जद इक मूरत अमर गुसाँई।
जिण ऐसा इक मता उपाया,
इच्छा कर ओर ॐ) कार रचाया ॥३॥
ता सेती तिरगुन उपजाये,तीन गुणों का पंच कहाये ।
निज आकास ताहि ते वाया,वायु पुत्र सो तेज कहाया ।।

तेज मांहि तोया उपजाई, तांसे सकल पृथ्वी उपजाई
जल की बूंद भया इक इंडा, इंडा फूट रच्या ब्रांडा ॥५॥
जिनके मांही विष्णु उपाया, विष्णु नाभि का कमल कहाया
कमल मांहि ब्रह्मा परकासा, जाकी सारी सृष्टि उजासा ॥६॥
ब्रह्मा की भृगुटी शिव जाया, यूँ कर तीनू देव उपाया ।
तीन सगत इक और उपाई, लक्ष्मी उमा सावत्री बाई ॥७॥
पारवती संकर घर वासा, सावित्री ब्रह्मा संग दासा ।
लक्ष्मी विष्णु सतो गुण पाया, रजो तमो मिल जग उपजाया
तीन देव मिल मांड उपाई, तामे भूला लोग लुगाई ।
षट-दरसण सब सक्र उपाया, जोग जिग्ग आचार बनाया ॥
लख चौरासी ऋषि अठ्यासी, वेद कतेब बध्या गफासी
खाणी चार चार ही वाणी, ऐती बात सुफल कर जाणी ॥
भवन चतुरदस लोक उपाया, बारै पंथां राह चलाया ।
पखा पखी में सब जग लागा,कर-कर जोर जमपुरी आगा
सबकै ऊपर जंवरो राजा, निस-दिन कऊ बजावै बाजा
धरमराय सबका कुतवाला, चवदै भवन आप दिस वाला
आपहि थापै आप उथावै, आपहि सब जग राह चलावै
धरमराय सबही का देवा, सब जग करै धरम की सेवा
तुष्टमान हुय धनहि दिरावै, विरचौ जब सब पकड़ मंगावै।
नान्हा मोटा सब चुण खाई, ऐसा निरजण का कसाई ॥

साखी

धरमराज निज काल है, सकल मंड का देव
रामदास गुण त्याग कर, लग्या अलख की सेव।

चौपाई

अनत जुगाँ ताँई पंथ अकेला, राज करै धरमायण चेला
न्यारा आप निरंजण साँई, वाँ कोइ दूजी माया नाँई
जिण ऐसा इक मता उपाया, हंस हमारे बहुरि न आया ।।
धरमराय सबही बस कीया, हम ताँई कोइ आण न दीया
सत्त सबद ले जग में जाऊँ, हंसां बंदी छोड़ कहाऊँ
संत रूप हुय साहिब आया, देह धार अरु संत कहाया ।।

सारांश

इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद्गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ।।
(गीता 18/63)

इस प्रकार यह गोपनीय से भी अति गोपनीय ज्ञान मैंने तुमसे कह दिया। अब तू इस रहस्ययुक्त ज्ञान को पूर्णतया भलीभाँति विचार कर जैसे चाहता है, वैसे ही कर।

इस लघु पुस्तिका में संकलित आत्म ज्ञान एवं रहस्यमय गुप्त ज्ञान, आध्यात्मिक- संसार में फैली

सभी शंकाओं को निर्मूल करने वाले मूलज्ञान के उद्घोषक एवं आत्मज्ञानी भेदी गुरु नितिनदास जी साहिब के सत्संग (प्रवचन माला) से प्रस्तुत हैं जिसमें उन्होंने आत्मज्ञान को न केवल गीता अपितु कबीरसाहिब, नानकसाहिब पलटूसाहिब ,गरीबदास जी, दादूदयाल जी, दरियाव साहिब, रविदास जी, चरणदास जी, रामदास जी एवं हरिरामदास जी महाराज सहित अनेक संतों की वाणियोंसे प्रमाणित किया है। अधिक जानकारी के लिए –

"कहत कबीर सुनो भाई साधो" चैनल

अथवा

"नितिनदास के सत्संग"

यूट्यूब पर सर्च करें।

वस्तु कहीं ढूढे कहीं, कैसे लागे हाथ ।
गुप्त वस्तु तब मिले, भेदी लीजे साथ ।।
भेदी लीन्हा साथ में , वस्तु दीन्हि लखाय ।
कोटि जन्म का पंथ था,पल में पहुंचा जाय।।
संत मुगत रा पोलिया, वाँसू करिए प्यार ।
कूँची वाँ रे हाथ है, खोले मोक्ष द्वार ।।

ART OF DEATH

एक दिन मृत्यु निश्चित है। यह अटल सत्य है। तब क्यों न हम मौत आने से पहले मरने की कला जान लें। मौत केवल उन्हीं को मारती है जिन्होंने जीते जी मरना नहीं सीखा । कबीर साहेब कहते है-

मरना मरना सब कहै, मरना जाने न कोई,
ऐसी मरनी जो मरे, फिर मरना न होई।।

इंसान के शरीर में 10 द्वार होते हैं। जब इंसान की मृत्यु होती है तो उसके प्राण इन्हीं 10 द्वारों से निकलते हैं। जो इस प्रकार से है- दो कान द्वार, दो नाक के द्वार, दो आँखो के द्वार, एक मुँह का द्वार और दो मल मूत्र द्वार। इन द्वार से निकलकर जीव 84 लाख योनियों में भटकता है। एक योगी दसवें द्वार से प्राण त्याग कर राज खानी को प्राप्त होता है। लेकिन उसकी भी मुक्ति नहीं होती।

नौ द्वार संसार के,दसवां योगी साध। एकादस खिड़की बनी कोई जाने संत सुजान।

इसलिये कबीर साहेब कहते हैं कि हमें ग्यारवें द्वार (जिसे शब्द द्वार कहा जाता हैं) का भेद प्राप्त कर लेना चाहिए ताकि मौत के समय शब्द द्वार में समा कर हमेशा के लिए इस मायावी संसार में जन्म-मरण के दुःख से मुक्त हो सकें।

दसवां ऊपर और है, ब्रह्मरंध्र है ठौर। तहं वां सूरत लगाय के, देह तजो फिर और

इस ढंग से मरने वाला मौत से नहीं डरता - जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द, मरने पर ही पाईये, पूरण परमानन्द।।

राम सुमिर रे प्राणिया

रामदासजी महाराज, रामधाम–खेड़ापा

पेंडे में विश्राम, विलम्ब न लाविये,
सतगुरू शरणे जाय, रामगुण गाविये।
खोज मुक्ति का द्वार, विचारो ज्ञान रे,
हरि हाँ, यूं कहे रामादास और मत मान रे।

तुम चाल्या हो किधर कूं, सांई है कुण देश,
जिण गेले सांई मिले, सो न्यारा उपदेश।

उस न्यारे उपदेश के लिए
यह पुस्तक पढ़िये या
'नितिनदास के सत्संग'
यूट्यूब पर सर्च करिये

अनुपम
अनुभव
गुप्तज्ञान
का खुलासा

मुद्रक : गौड़ प्रिण्टर्स, जोधपुर ✆ 9413962741